

बन्दे
साधू-मन खों मांजोरे ^{ज्ञान को मंजन लोले}, ये खों खोजे मांजोरे ^{ये खों खोजे}

① आई वे माता लिख गई हैं, दयी रात के अंक । ॥२॥
तन में मन खों मंज गई, और फूंक गई हैं शंक ॥ हां रे फूंक गई-----
बन्दे/साधू-मन खों-----ज्ञान को मंजन-बन्दे/साधू-----

② मन तेरो जब मंज जेहे तो, जगमग ज्योती पाहे । ॥२॥
सुचवे मन से मंखों बुलैहे, दीड़ी दीड़ी आहे ॥ हां दीड़ी दीड़ी-----
बन्दे/साधू-मन खों-----ज्ञान को मंजन-बन्दे/साधू-----

③ आज मनई मन सोच ले, जा है सांची बात । ॥२॥
मन मोदर में मंखों निरजै, कर जेहे दिन रात ॥ हां खों कर जेहे-- ॥२॥
बन्दे/साधू-मन खों-----ज्ञान को मंजन-बन्दे/साधू-----

④ सांची सांची हम कहें रे - मन खों लेव समहार ॥२॥
बिना समझरे अपने मन खों, नेहू हो भव पार ॥ हां रे नेहू हो-----
बन्दे/साधू-मन खों-----ज्ञान को मंजन-बन्दे/साधू-----

⑤ "श्री बाबा श्री" ने अपने मन खों, कर दओ मंखों के होवाहे । ॥२॥
मन खुद मन में नाच उगे, मोहे खूब मिले रखवाले ॥ मोहे खूब-----
बन्दे/साधू-मन खों-----ज्ञान को मंजन-बन्दे/साधू-----